Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal
Volume 3 | Issue 3 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)
Published Date: 24/09/2025

रामदरश मिश्र की कहानियों में ग्रामीण जीवन और सामाजिक संघर्ष का चित्रण

[1]सुनीता, [2]डॉ. अंकित

[1]शोधार्थी, [2]पर्यवेक्षक

[1-2]विभागः हिन्दी, आई. ई. सी. विश्वविद्यालय, बद्दी (हि. प्र.),

सार

रामदरश मिश्र की कहानियाँ भारतीय ग्रामीण जीवन और समाज के विविध पहलुओं को एक अद्वितीय शैली में प्रस्तुत करती हैं। उनकी कहानियाँ न केवल ग्रामीण जीवन की यथार्थता को उजागर करती हैं, बल्कि सामाजिक संघर्ष, पारिवारिक समस्याएँ, और मनुष्य की मानसिकता पर गहरी टिप्पणी भी करती हैं। मिश्र जी की कहानियाँ भारतीय समाज की कुरीतियों, भेदभाव, और असमानताओं को प्रभावी तरीके से प्रस्तुत करती हैं। उन्होंने समाज के निचले वर्ग, नारी के संघर्ष, और व्यक्तिगत संबंधों की जटिलताओं को अपनी कहानियों के माध्यम से चित्रित किया है। इस अध्ययन में रामदरश मिश्र की कहानियों का सामाजिक आयाम, परिवार के भीतर रिश्तों की दुरवस्था, और उनके द्वारा दी जाने वाली नैतिक शिक्षा पर विचार किया गया है।

मुख्य शब्दः रामदरश मिश्र, ग्रामीण जीवन, सामाजिक संघर्ष, पारिवारिक समस्याएँ, नारी के संघर्ष, सामाजिक असमानताएँ, नैतिक शिक्षा।

भूमिका

कहानी, साहित्य का एक अद्वितीय रूप है, जो मानवीय जीवन के विभिन्न पहलुओं, संघर्षों, और भावनाओं को प्रस्तुत करता है। यह एक ऐसी रचनात्मक प्रक्रिया है, जिसमें एक निश्चित ढांचे, पात्रों, और घटनाओं के माध्यम से किसी घटना या अनुभव का चित्रण किया जाता है। कहानी का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं है, बल्कि यह समाज के यथार्थ, मानवीय संवेदनाओं और सामाजिक संरचनाओं को उजागर करने का एक सशक्त माध्यम है। कहानी में कल्पना, यथार्थ, और भावनाओं का संगम होता है, जो पाठक को न केवल अभिव्यक्तियों से जोड़ता है, बल्कि उन्हें जीवन की गहरी सच्चाइयों से भी परिचित कराता है।

कहानी एक लघु गद्य या काव्यात्मक रचना होती है, जो एक निश्चित प्रारूप के भीतर एक घटना या विषय को केंद्रित करती है। यह घटना, व्यक्ति, या समाज से संबंधित हो सकती है, और कहानी के माध्यम से लेखक अपने विचारों, दृष्टिकोणों और संदेशों को प्रस्तुत करता है। कहानी का उद्देश्य समाज के विभिन्न मुद्दों, व्यक्तिगत संघर्षों, और जीवन के उद्देश्यों को व्यक्त करना होता है।

कहानी की परिभाषा करना कोई सरल कार्य नहीं है, क्योंकि यह विभिन्न साहित्यिक रूपों का सम्मिलन होती है। फिर भी, एक सामान्य परिभाषा में कहा जा सकता है कि कहानी वह रचनात्मक कृति है, जो घटनाओं और पात्रों के माध्यम से एक विषय को विस्तार से प्रस्तुत करती है। कहानी में पात्रों के विचार, उनके कार्य, और उनके अनुभव की व्याख्या की जाती है, जिससे पाठक जीवन के किसी विशेष पहलू से जुड़ता है और उसमें गहरी समझ प्राप्त करता है।

कहानी के परिभाषा में कई आयाम होते हैं:

1. कथानकः कहानी का केंद्रीय तत्व होता है उसका कथानक, जो पात्रों के बीच घटित घटनाओं का एक क्रमबद्ध विवरण है। घटनाएँ एक दूसरे से जुड़ी होती हैं और मिलकर एक उद्देश्य की ओर बढ़ती हैं।

2. पात्र और संवादः कहानी में पात्र महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रत्येक पात्र की अपनी विशेषताएँ होती हैं, और उनके संवाद कहानी के अर्थ को स्पष्ट करते हैं।

3. समाज और संस्कृति का चित्रणः कहानी का उद्देश्य समाज और संस्कृति की सच्चाइयों को दिखाना भी हो सकता है। यह समाज की विसंगतियों, सामाजिक असमानताओं, और मानवीय भावनाओं को उजागर करने का एक सशक्त माध्यम है।

4. नैतिकता और संदेशः अधिकांश कहानियाँ किसी नैतिक संदेश या जीवन की सच्चाई को पाठकों तक पहुँचाती हैं। ये संदेश जीवन को समझने, परिपूर्ण बनाने, और सामाजिक बदलाव की प्रेरणा देने के रूप में होते हैं।

कहानियों का उद्देश्य केवल मनोरंजन करना नहीं है। इसके माध्यम से लेखक पाठक को जीवन के विभिन्न पहलुओं पर सोचने के लिए प्रेरित करता है। कहानी का उद्देश्य सामाजिक मुद्दों, व्यक्तिगत संघर्षों, और मानवीय संवेदनाओं को सामने लाना होता है। कहानियों के माध्यम से लेखक समाज के सामने ऐसी समस्याएँ रखते हैं, जिनका समाधान आवश्यक है। ये समस्याएँ न केवल व्यक्तिगत होती हैं, बल्कि सामूहिक स्तर पर भी प्रभाव डालती हैं। उदाहरण स्वरूप, ग्रामीण जीवन, जातिवाद, भेदभाव, और महिलाओं के अधिकार जैसे

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal
Volume 3 | Issue 3 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)
Published Date: 24/09/2025

मुद्दे कहानी के माध्यम से प्रभावी तरीके से उजागर किए जाते हैं। कहानी में दिए गए संदेश अक्सर सामाजिक बदलाव, संघर्ष, और न्याय के सिद्धांतों को लेकर होते हैं।

कहानी समाज की कुरीतियों, संघर्षों और असमानताओं पर प्रकाश डालती है, जिससे पाठक को समाज में बदलाव की आवश्यकता का एहसास होता है। इसके माध्यम से हम यह भी सीखते हैं कि जीवन में आने वाली कठिनाइयाँ अस्थायी होती हैं, और उनका समाधान निरंतर प्रयास और संघर्ष में है।

कहानियों का शिल्प और संरचना बहुत महत्वपूर्ण होती है। प्रत्येक कहानी की अपनी एक विशेष शैली और संरचना होती है, जो उसे अन्य साहित्यिक रूपों से अलग बनाती है। कहानी में घटनाओं का क्रम, पात्रों के संवाद, और उनके कार्य बहुत प्रभावशाली होते हैं।

1. प्रारंभः हर कहानी की एक शुरुआत होती है, जिसमें कहानी का वातावरण, पात्रों का परिचय, और प्रारंभिक घटनाओं का चित्रण होता है। शुरुआत में पाठक को यह पता चलता है कि कहानी किस दिशा में जाएगी और इसके पात्र किस प्रकार के हैं।

2. विकासः कहानी के मध्य में घटनाएँ तेजी से घटित होती हैं। पात्रों के बीच संघर्ष और उनके अनुभव की गहराई बढ़ती है। इस चरण में कहानी के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला जाता है, और पात्रों के व्यक्तिगत और सामाजिक संघर्ष सामने आते हैं।

3. कुल बसपउं•ः कहानी का चरमोत्कर्ष उस स्थान पर आता है, जब संघर्ष अपने उच्चतम बिंदु पर पहुँचता है। यहां पर पात्रों की मानसिक स्थिति, उनके कार्य, और उनका समाधान सामने आता है।

4. समाप्तिः अंत में कहानी किसी निष्कर्ष या समाधान तक पहुँचती है, जिसमें पाठक को उन संघर्षों का समाधान और पात्रों की यात्रा का पूरा चित्रण मिलता है।

कहानियाँ विभिन्न प्रकार की होती हैं, जो अपनी संरचना, विषय और उद्देश्य के आधार पर अलग–अलग होती हैं। कुछ प्रमुख प्रकार हैंः

1. नैतिक कहानियाँः इन कहानियों का उद्देश्य पाठकों को नैतिक शिक्षा देना होता है। इनमें अक्सर एक कहानी के माध्यम से सामाजिक या व्यक्तिगत नैतिक सिद्धांतों पर बल दिया जाता है।

2. ऐतिहासिक कहानियाँः इस प्रकार की कहानियाँ इतिहास के प्रमुख घटनाओं या पात्रों को आधार बनाकर लिखी जाती हैं। ये कहानियाँ इतिहास की सच्चाइयों और उनके प्रभाव को उजागर करती हैं।

3. सामाजिक कहानियाँः इन कहानियों में समाज के विभिन्न पहलुओं, जैसे कि गरीबी, जातिवाद, और असमानता को चित्रित किया जाता है। यह समाज के अंदर के संघर्षों और बदलाव की दिशा को दिखाती हैं।

4. प्रकृति आधारित कहानियाँः ऐसी कहानियाँ मुख्य रूप से प्रकृति और उसके सौंदर्य पर आधारित होती हैं। इनमें पात्रों की भावनाएँ और संघर्ष प्रकृति के बीच घटित होते हैं।

रामदरश मिश्र की कहानियाँ भारतीय ग्रामीण जीवन की यथार्थता और उसमें हो रहे परिवर्तनों को प्रस्तुत करती हैं। वे अपने साहित्य के माध्यम से समाज की कुरीतियों और संघर्षों को उजागर करते हैं। मिश्र जी की कहानियाँ जीवन के गहरे अनुभवों और संघर्षों

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal
Volume 3 | Issue 3 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)
Published Date: 24/09/2025

को शब्दों में बाँधती हैं। उनकी कहानियाँ व्यक्तिगत और सामाजिक समस्याओं पर आधारित होती हैं। वे गाँव के जीवन, नारी के संघर्ष, सामाजिक असमानताओं और आम आदमी की परिस्थितियों को अपनी कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। मिश्र जी का लेखन उस समय की राजनीतिक और सामाजिक संरचना की आलोचना करता है, जिसमें परिवर्तन की आवश्यकता महसूस होती है। उनकी कहानियाँ पाठकों को न केवल समाज की समस्याओं के बारे में सोचने के लिए प्रेरित करती हैं, बल्कि यह भी दिखाती हैं कि समाज में बदलाव केवल जागरूकता और संघर्ष से ही संभव है। मिश्र जी की कहानियाँ न केवल यथार्थ को प्रस्तुत करती हैं, बल्कि यह भी दिखाती हैं कि हर संघर्ष में एक समाधान है, बस हमें उसे पहचानने और उसके लिए काम करने की आवश्यकता है।[41]

कहानियों का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं होता, बल्कि यह समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागर करने, मनुष्यों की मानसिकता और उनके संघर्षों को समझने का माध्यम है। रामदरश मिश्र की कहानियाँ इस उद्देश्य को पूरी तरह से पूरा करती हैं। वे अपनी कहानियों के माध्यम से समाज में व्याप्त असमानताओं, भेदभाव और संघर्षों को प्रस्तुत करते हैं। उनकी कहानियाँ पाठकों को जीवन की सच्चाइयों से परिचित कराती हैं और समाज में बदलाव की आवश्यकता को महसूस कराती हैं। कहानी का शिल्प और संरचना महत्वपूर्ण होते हुए भी, उसका उद्देश्य सामाजिक, नैतिक और मानसिक विचारों को प्रकट करना होता है। यह मानव जीवन और समाज को बेहतर बनाने की दिशा में एक सशक्त कदम है। रामदरश मिश्र की कहानियाँ न केवल यह सिखाती हैं कि संघर्षों का समाधान संभव है,

[41] मिश्र रामदरश, हिन्दी कहानी अंतरंग पहचान, दिल्ली, कंदर्प प्रकाशन, वर्ष–1999, पृ0–67

बल्कि यह भी कि जीवन के हर पहलू में बदलाव लाना संभव है, यदि हम उसे समझने और बदलने के लिए पूरी ईमानदारी से प्रयास करें।

डॉ. रामदरश मिश्र की कहानियाँः

सामाजिक आयाम

भारतीय जीवन की आधार शिला गाँव ही तो है और गाँवों की प्रगति सारे भारत देश की प्रगति ही है। इसलिए रामदरश मिश्र ने कहा है कि ''यदि भारतीय लेखक भारतीय जनता को छोड़कर सार्वभौम चेतना को व्यक्त करना चाहेगा तो वह न जीवन दे पायेगा और न वह चेतना। चेतना को अपने परिवेश के जीवन से संबंध करके ही देखना पड़ेगा और यह सत्य है कि भारत में गाँव का जीवन आज भी प्रमुख है। गाँव के जीवन को उभारना सच्चे अर्थों में भारत को उभारना है, या युग जीवन को उभारना है।'' अतः रामदरश मिश्र की अधिकाँश कहानियाँ गाँव के जीवन–संदर्भों को और वहाँ की जीवन्त घटनाओं को उजागर करती हैं।

गाँव के जीवन संदर्भों को लेकर चलनेवाली मिश्र जी की प्रमुख कहानियाँ हैं– 'मनोज जी', 'अभिशप्त राग', 'भागवत कथा', 'एक रात', 'बेला मर गयी', 'खाली घर', 'मंगल यात्रा', 'पशुओं के बीच', 'एक औरत एक जिन्दगी', 'एक और यात्रा', 'माँ, सन्नाटा और बजता हुआ रेडियो', 'खण्डहर की आवाज', 'आधुनिक', 'घर', 'जमीन', 'जित्तन भइया', 'दूरियाँ', 'सड़क', 'अधूरी कहानी', 'इज्जत', 'सवाल के सामने', 'सर्पदंश', 'बसंत का एक दिन', 'अकेला मकान', 'पानी', 'लड़की', 'अपने लिए', 'उलझन', 'एक मामूली आदमी', 'हंसी' और 'सोनू कब आयेगा पापा?' इन सारी कहानियों में गाँव के परिवेश और संवेदनात्मक सच्चे जीवन

यथार्थ उभरे हुए हैं। इन कहानियों की ग्राम चेतना के विभिन्न आयामों जैसे सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक पर विस्तार से विचार किया जा सकता है। यहाँ ग्राम चेतना के सामाजिक आयाम पर विचार किया जा रहा है।

भारतीय समाज युगों से राजनीतिक परतन्त्रता के कारण जर्जर बन गया था। अतः लोगों का सामाजिक जीवन विशेष रूप से ग्रामों में रहने वालों का बहुत पिछड़ा हुआ जीवन रहा। देश आर्थिक व सांस्कृतिक रूपों से भी परावलम्बन एवं परमुखापेक्षी बनने लगा था। ब्रिटिश सरकार जोंक की भाँति सारे आर्थिक स्रोतों का हरण कर रही थी। देश में बेकारी, अकाल आदि तीव्र रूप से बढ़ती जा रही थी। तो अंग्रेजी सरकार इसकी रोकथाम न कर सकती थी अथवा करना नहीं चाहती थी। बंगाल में व्याप्त भीषण सूखा इसका ज्वलन्त उदाहरण है।

ग्रामीण जमात के सामाजिक जीवन में परिवार, शिक्षा, जात–पाँत, छुआछूत, रूढ़ि एवं परम्परा, अन्धविश्वास, शोषण, अन्याय, अत्याचार और भ्रष्टाचार के कारण स्वाभाविक विकास नहीं हुआ है। इसके हेतु ग्रामीण लोगों का सामाजिक जीवन बड़ा शोचनीय रहा है। सती–प्रथा, बाल–विवाह, परदे की प्रथा और दहेज प्रथा आदि के कारण नारी समाज समानाधिकारों से वंचित हो गया था।

स्वातन्त्र्योत्तर काल में सरकार द्वारा ग्रामों के सुधार के लिए अनेक प्रकल्प और योजनाएँ कार्यान्वित की गई हैं और उनके विकास के लिए कोशिश भी की जा रही है। किन्तु सरकारी योजनाओं की असफलता और ग्रामीण लोगों के अज्ञानी–अशिक्षित होने के कारण उनका विकास नहीं हो रहा है।

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed
Multidisciplinary Journal
Volume 3 | Issue 3 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)
Published Date: 24/09/2025

मिश्रजी ने अपनी कहानियों में ग्रामीण जीवन के सामाजिक–संवेदनशील तथ्यों का अपने अनुभव से चित्रण किया है। वे खुद पिछड़े हुए डुमरी गाँव के हैं। अतः उन्होंने ग्रामीण जीवन की समस्याओं और विसंगतियों को स्वयं देखा है, सहा है और भोगा भी है। इसलिए रामदरश मिश्र ने अपनी कहानियों में ग्रामीण जीवन के हरेक एवं विभिन्न आयामों का खासकर सामाजिक आयाम का सही चित्रण यथाशक्ति किया है।

पारिवारिक जीवन

परिवार को भारतीय संस्कृति में बड़ा महत्व रहा है। व्यक्ति और समाज के लिए परिवार का अनन्य साधारण योगदान रहता है। उससे मनुष्य के प्रारंभिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। क्योंकि समाज का मूलाधार और विकास का केन्द्र स्थान परिवार होने के कारण संस्कृति की रक्षा और संवर्धन होता है। परिवार से संस्कार संवर्धन, यौन सम्बन्धों की पूर्ति, संतानोत्पत्ति, जीविका, शिक्षा, प्रेम, वात्सल्य, सामाजिक एवं व्यावसायिक ज्ञान आदि लाभ होते हैं।

परिवार में माता–पिता, पति–पत्नी, भाई–बहन, चाचा–चाची और उनकी संतानें रहती हैं। परम्परागत रूढ़ियों के कारण परिवार में नारी को पुरुष की आश्रिता समझी जाती है। सामाजिक मर्यादाओं के अनुरूप उस पर अनेक प्रकार के बंधन हैं। परिवार में नारी का शोषण होता है। उसे अन्याय और अत्याचारों को सहना पड़ता है। प्राचीन काल में भारतीय परिवार सम्पन्न और समृद्ध थे। लेकिन वर्तमान स्थिति में परिवार के मूल ढाँचे में जबरदस्त परिवर्तन हुआ है। औद्योगीकरण, भौतिकवादी प्रवृत्ति, नई शिक्षा पद्धति, संस्कार हीनता, आर्थिक विषमता, राजनीतिक चेतना, आपसी ईर्ष्या आदि के कारण संयुक्त–परिवार टूटने लगे हैं। फिलहाल संयुक्त परिवारों के टूटने से पति–पत्नी, माता–पिता, पिता–पुत्र,

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal
Volume 3 | Issue 3 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)
Published Date: 24/09/2025

माता–संतान, भाई–भाई, भाई–बहन, चाचा–भतीजा आदि के सम्बन्धों में विघटन हो रहा है। यह बड़ी समस्या होकर संयुक्त परिवारों के लिए बहुत बड़ी बाधा बनती जा रही है। मिश्र जी ने अपनी कहानियों में इस भयंकर समस्याओं का चित्रण किया है।

पति–पत्नी के सम्बन्ध

पारिवारिक जीवन की आधारशिला है पति–पत्नी का सम्बन्ध । इन दोनों के सहयोग और आपसी प्रेम भाव से परिवार की उन्नति होती है। इनके बनने और बिगड़ने पर परिवार का यश–अपयश, सुख–दुःख, उन्नति–अवनति अवलम्बित रहती है। दोनों जब अपना सर्वस्व एक–दूसरे के लिए समर्पित करते हैं, तब परिवार सुखी एवं समृद्ध बनता है। प्राचीन काल में पत्नी पति को देवता मानकर पूजती थी और पति भी उसे सम्मान देता था। किन्तु आधुनिक काल में इनके सम्बन्धों में स्नेह, विश्वास और समर्पण की भावना नहीं रही है। वे एक–दूसरे से दूर जा रहे हैं, इसलिए पति–पत्नी के पवित्र सम्बन्धों में दरारें पड़ने लगी हैं।

'अपने लिए' कहानी में पति–पत्नी में होनेवाले झगड़ों के कारण परिवार की शान्ति नष्ट हुई। कहानी की नायिका और उसकी छोटी बहन की सौतेली माँ दुष्ट स्वभाव की थी। वह बेटियों के विरुद्ध पति से शिकायतें करती थी। हमेशा झगड़ा होने के कारण उनके परिवार की शान्ति नष्ट हो गयी थी। 'अपने लिए' कहानी के पारस की पत्नी जीवन की राह में हँसकर लड़ने को तैयार हो जाती है। यातनाओं के सिवा उसके जीवन में कुछ न मिला हो, उस लड़की के लिए अब पागल पति का सहारा ही बहुत महत्व रखता है। वह जीवन की पगडंडियों पर कई बार लड़खड़ाई, पर अब दृढ़ होकर खड़ी है। वह बड़ी समझदारी के साथ निर्णय कर लेती है कि– ''आखिर मेरी ही तरह इस आदमी का भी क्या दोष है?

Volume 3 | Issue 3 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)
Published Date: 24/09/2025

कौन चाहता है, पागल होना? लोग पागल बना देते हैं। क्या, मैं इन्हें असहाय छोड़ जाऊँ? मेरे भागने पर मुझे क्या मिलेगा मौत के सिवाय ? नहीं, मैं कहीं नहीं जाऊँगी। लड़ूँगी अपने भाग्य से। लड़ूँगी इस आदमी के लिए। लड़ूँगी अपने लिए।''[42]

'बेला मर गई' कहानी में एक गरीब बाप, गाँव भर के तानों से तंग आकर अपनी स्वस्थ, सुन्दर पुत्री बेला की शादी एक अशक्त मरियल लड़के के साथ कर देता है जिसके कारण बेला विवाहित होकर भी अविवाहित ही रह जाती है। इसके अलावा वह लकड़ी जैसा सूखा हुआ पति बेला को उसके मायके में ही मारता—पीटता और डराता—धमकाता है, तो बेला वह सन्नारी है कि यह सब कुछ मौन रहकर ही सहन करती है— ''मुझे बड़ा अजीब लगा कि यह दस—ग्यारह वर्ष का रुग्ण परोपजीवी बालक जूते से मारता है बेला को। बेला चाहे तो उसे लेकर मुट्ठियों में मसल दे, किन्तु वह रोने केलिए अंदर सरक गयी। मुझे बड़ा अजीब सा लगा किन्तु सचमुच इसमें अजीब लगने की कोई बात नहीं थी। पति चाहे कैसा भी हो किन्तु उसे युग—युग से यह संस्कार पिलाया गया है कि वह एक नारी का पति है, यानी उसका अधिकारी। और नारी चाहे जितनी भी उपलब्धियाँ प्राप्त कर ले किन्तु वह एक अधिकारी पुरुष की अधिकृत पत्नी है, पुरुष कुछ भी हो उसका सौभाग्य है और सौभाग्य ही नारी का सर्वस्व है। यह संस्कार बोध उसे चिरन्तन काल से मिला है— वह कहाँ जा सकता है?''[43]

'अकेली वह' कहानी में हिन्दुस्तान के बँटवारे—कोलाहल से प्रतिभा और उसके पिता लखनऊ शहर में पहुंचते हैं और उसके पिता के लापता से प्रतिभा अकेली वह रह गयी। रिफ्यूजी

[42] मिश्र रामदरश, अपने लिए, दिल्ली, कंदर्प प्रकाशन, वर्ष—1999, पृ0—159

[43] मिश्र रामदरश, अकेला मकान, दिल्ली, कंदर्प प्रकाशन, वर्ष—1999, पृ0—94

कैंप के मैनेजर विनोद शुक्ला ने उसे शरण दी और आत्मीय बेटी के रूप में मानकर उसका पालन– पोषण किया, शिक्षा दी और विवाह भी करवाया। एयरफोर्स का ऑंफिसर महेन्द्र के साथ प्रतिभा की शादी हुई। कुछ ही सालों में पति–पत्नी के बीच विराग होता है और उसकी पदोन्नति होने से एयर फोर्स से इंडियन एयरलाइंस में नौकरी करने लगता है। साथ ही उनके व्यवहार में बदलाव आने लगता है। देर से लौटना, कभी– कभी झल्लाने लगता और बच्ची के प्रति भी विचारता नहीं। महेन्द्र को एक विमान–परिचारिका से प्रेम हो गया है और दोनों शादी करना चाहते हैं। उसने उसे साथ रहने या तलाक लेने की बात भी कही तो वह गुस्से से बिफर पड़ी ''क्या समझ रखा है तुमने मुझे ? एक निस्पंद जड़ पदार्थ, जो तुम्हारी उस गौहरजान की लम्पटता की छाया में चुपचाप पड़ी रहूँगी। और सुनो, मैं चाहूँ तो तुम्हें तलाक न देकर तुम्हें नचा सकती हूँ किन्तु वह भी नहीं करूँगी। अब तुम्हारी पत्नी कहलाने में भी मुझे अपमान लगता है। जहाँ जिन्दगी के इतने जहर पिये हैं वहाँ यह भी सही। जाओ तलाक के लिए कोर्ट में मेरे खिलाफ जो इलजाम लगाना हो लगा लो, मैं स्वीकार कर लूँगी।''[44] इस तरह पति–पत्नी के बीच झगड़ा होकर उसके परिवार बिगड़ते हैं।

'लाल हथेलियाँ' कहानी का सुभाष नागरी चकाचौंध और आकर्षण से प्रभावित होकर गँवार, बदसूरत पत्नी ममता की उपेक्षा करता था। वह उसे हीन समझता था और निर्मम प्रताड़ना और अत्याचार भी करता था। इसलिए ममता को बहुत दुख हुआ। ममता दिल का दौरा पड़कर मर गयी। पति के दुर्व्यवहार और रंगीलेपन के कारण पति–पत्नी के रागात्मक जीवन खो गया। दाम्पत्य जीवन में असफलता प्राप्त कर अकेली रहने वाली स्त्रियों का

[44] वही–पृ–116.

संघर्ष मिश्रजी ने अनेक कहानियों में बड़ी खूबी से चित्रित किया है। 'अकेली वह', 'वह औरत', 'अकेला मकान' 'बसन्त का एक दिन', 'एक अधूरी कहानी', 'आखिरी चिट्ठी' आदि कहानियों के स्त्री पात्र अपने जीवन में परिस्थिति वश अकेले हैं।

रामदरश मिश्र की कहानियों में मनुष्य की चिन्ता की वैचारिकता की चेतना फूटती है और यही चेतना मनुष्य के दुख–दर्द के साथ गहराई से जोड़ती है। उनकी कहानी का केन्द्रीय तत्व रूपी मानवीय करुणा और अन्तर्वेदना के विभिन्न धरातल संक्रान्त अनुभवों से बनी रागात्मक दृष्टि है। 'चिट्ठियों के बीच' कहानी का मुख्य पात्र डॉ. देव सोचता है– ''मित्रों को वह कैसे समझाये कि वह यह सब कुछ खुद समझता है। लेकिन चीजों को अलग–अलग समझना ही तो समझना नहीं है। तमाम चीजों को एक साथ समझना भी समझना होता है और वही बेहतर समझना होता है और समझना ही तो जीना नहीं है, जीना तो एक जटिल प्रक्रिया है समझने की, भोगने की, समझकर भी न समझने की यानी उसे राग में डुबा देने की, पाने की और त्यागने की। और वह किसी को कैसे समझाये कि वह अपने गाँव से, घर से जुड़ा हुआ है समझ से नहीं, एक आंतरिक राग लय से।''[45] इससे मिश्रजी की कहानी के केन्द्रीय पात्र की मानसिकता स्पष्ट होता है।

पिता–पुत्र का सम्बन्ध चित्रण

पुराने जमाने में पिता अपने पुत्रों का ठीक तरह से पालन पोषण करता था और पुत्र भी पिता की आज्ञा का पालन करता था। लेकिन आधुनिक काल में पिता–पुत्र दोनों के सम्बन्धों में तनाव निर्माण हो रहा है। पिता–पुत्र में एक–दूसरे के प्रति स्नेह, आदर की भावना,

[45] मिश्र रामदरश, चिट्ठियों के बीच, नई दिल्ली, किताब घर प्रकाशन, वर्ष–1992, पृ0–18

सहृदयता, अपनापन एवं भरोसा घटने लगा है। अतएव उन दोनों के बीच जो सम्बन्ध है उसमें टूटन आ जा रहा है। 'एक अधूरी कहानी' नामक कहानी में नारायण और सूरज पिता–पुत्र हैं। नारायण सिंगापुर में काम करते थे और उन्होंने दूसरी शादी भी कर ली है। इस कारण बाप बेटे अलग हो गये हैं। सूरज अपनी माँ के साथ गाँव में रहता था। एक दिन उसकी माँ परिवार छोड़कर भाग गयी। पिता के दूसरे विवाह से उसके परिवार में झगड़े हुए और वह परिवार टूट गया।[46]

'सड़क' कहानी में गाँव के रिटायर्ड मास्टर चन्द्रभान पांडे की व्यथा–कथा है। वह एक ब्राह्मण, पुराने कांग्रेसी और स्कूल के शिक्षक रहे, लेकिन बुढ़ौती में संतान की बात माननी पड़ी। उसका बेटा रमेश कहता है–''छोड़िए खादी–वादी पिताजी ! मिल की धोती मजबूत और सस्ती होती है। वह इस तरह जगह–बेजगह धोखा नहीं देती।'' बेटे के इस मनोभाव के विरुद्ध पांडे के मन में आया– ''गरीब हुए तो क्या इस बुढ़ौती में अपनी आबरू बेचेंगे!''[47]

निष्कर्ष

रामदरश मिश्र की कहानियाँ भारतीय समाज की गहरी सच्चाइयों को उजागर करती हैं। उनके लेखन में न केवल भारतीय ग्रामीण जीवन की यथार्थता और कठिनाइयों का चित्रण है, बल्कि वे समाज में व्याप्त असमानताओं, कुरीतियों, और मानसिक दबावों को भी प्रभावी रूप से प्रस्तुत करते हैं। उनका साहित्य हमें यह समझने के लिए प्रेरित करता है कि

[46] मिश्र रामदरश, सड़क, नई दिल्ली, किताब घर प्रकाशन, वर्ष–1992, पृ0–18

[47] वही–पृ–21.

सामाजिक बदलाव और सुधार तभी संभव हैं जब हम अपने समाज की सच्चाइयों को स्वीकार करें और हर संघर्ष को समाधान की दिशा में ले जाएं। मिश्र जी की कहानियाँ समाज के संवेदनशील मुद्दों पर प्रकाश डालते हुए पाठकों को सोचने और जागरूकता के स्तर पर बदलाव लाने की प्रेरणा देती हैं।

संदर्भ

यादव फूलबदन, रामदरश मिश्र एवं काव्य कृतित्व, दिल्ली, राधा प्रकाशन, वर्ष–1992

खाडपे डा० अमृत, कहानीकार रामदरश मिश्र, गुजैनी, कानपुर, विद्या प्रकाशन, वर्ष–2012

प्रति कुलदीप, लोकगीतों का विकासात्मक अध्ययन, आगरा, बैतुल प्रकाशन, वर्ष–2004

प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों में प्रगतिशीलता, डा० निर्मल कुमारी वार्ष्णेय, वाराणसी, संजय बुक सेन्टर, वर्ष–1992

मधुरेश, हिन्दी उपन्यास का विकास, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, वर्ष–2011

मदान इन्द्रनाथ, आज का हिन्दी उपन्यास, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, वर्ष–1996

मुकर्जी रवीन्द्रनाथ, भारत में सामाजिक कल्याण और सुरक्षा, मंसूरी, सरस्वती सदन, वर्ष–1960

मनु, प्रकाश, रामदरश मिश्र एक अंतर्यात्रा, दिल्ली, वाणी प्रकाशन, वर्ष–2004

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal
Volume 3 | Issue 3 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)
Published Date: 24/09/2025

द्विवेदी आचार्य हजारी प्रसाद, हिन्दी साहित्य की भूमिका, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन,, वर्ष–2011

दिनकर सिंह रामधारी, संस्कृति के चार अध्याय, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, वर्ष–2018

तिवारी रामचन्द्र, हिन्दी का गद्य साहित्य, वाराणसी विश्वविद्यालय प्रकाशन, वर्ष–2018

तिवारी, नित्यानंद एवं ज्ञानचंद गुप्त, रचनाकार रामदरश मिश्र, दिल्ली, नमन प्रकाशन, भाग 2, वर्ष–1997